दक्षिण भारतीय ताल पद्धति

- आधुनिक युग में भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित संगीत को दक्षिण भारतीय या कर्नाटकीय संगीत कहते हैं और उस संगीत में प्रयुक्त ताल पद्धति को दक्षिणी या कर्नाटकीय ताल पद्धति कहते है।
- दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में छः अंगों का प्रयोग होता है।

	नाम	चिन्ह	मात्रा
1.	अणुद्रुत	◡	1
2.	द्रुत	0	2
3.	लघु	|	4
4.	गुरू	ऽ	8
5.	प्लुत	ऽ	12
6.	काकपद	✙	16

जातियाँ

- दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में 5 जातियाँ है–तिस्त्र, चतस्त्र, खण्ड, मिश्र और संकीर्ण में लघु का मान क्रमशः 3, 4, 5, 7, 9 मात्रा के बराबर होता है। जातियों के परिवर्तन का प्रभाव केवल लघु अंग पर ही पड़ता है और शेष अंग अप्रभावित रहते है।

सप्त सूलादि ताल

नाम	चिन्ह
• ध्रुव ताल	।0।।
• मठ्य ताल	।0।
• रूपक ताल	0।
• झम्प ताल	। ∪ 0
• त्रिपुटताल	। 0 0
• अठ्ताल	।। 0 0
• एकताल	।

जातियों के भेद से 35 तालों का निर्माण होता है।

1. ध्रुव ताल — स्वरूप । 0 ।।

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3+2+3+3	11
ख. चतस्त्र	4+2+4+4	14
ग. खण्ड	5+2+5+5	17
घ. मिश्र	7+2+7+7	23
ड़. संकीर्ण	9+2+9+9	29

2. मठ्य ताल — स्वरूप । 0 ।

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3+2+3	8
ख. चतस्त्र	4+2+4	10
ग. खण्ड	5+2+5	12
घ. मिश्र	7+2+7	16
ड़. संकीर्ण	9+2+9	20

3. रूपक ताल स्वरूप 0 |

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	2+3	5
ख. चतस्त्र	2+4	6
ग. खण्ड	2+5	7
घ. मिश्र	2+7	9
ड़. संकीर्ण	2+9	11

4. झम्प ताल स्वरूप | ∪ 0

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3+1+2	6
ख. चतस्त्र	4+1+2	7
ग. खण्ड	5+1+2	8
घ. मिश्र	7+1+2	10
ड़. संकीर्ण	9+1+2	12

5. त्रिपुट ताल स्वरूप | 0 0

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3+2+2	7
ख. चतस्त्र	4+2+2	8
ग. खण्ड	5+2+2	9
घ. मिश्र	7+2+2	11
ड़. संकीर्ण	9+2+2	13

6. अठ् ताल स्वरूप || 0 0

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3+3+2+2	10
ख. चतस्त्र	4+4+2+2	12
ग. खण्ड	5+5+2+2	14
घ. मिश्र	7+7+2+2	18
ड़. संकीर्ण	9+9+2+2	22

7. त्रिपुट ताल स्वरूप ।

जाति	मात्रा विभाग	कुल मात्रा
क. तिस्त्र	3	3
ख. चतस्त्र	4	4
ग. खण्ड	5	5
घ. मिश्र	7	7
ड़. संकीर्ण	9	9

धन्यवाद

शुभम वर्मा